**International Journal of Research in Hindi**
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 13-09-2019; Accepted: 28-09-2019; Published: 14-10-2019
Volume 1; Issue 2; 2019; Page No. 47-49

# गोदान: अमर नायक होरी का समसामयिक संदर्भ

**राजीव कुमार प्रसाद**
हिंदी शोधार्थी, यु० जी० सी०- नेट, ल० ना० मि० वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

**सारांश**

गोदान' कथा सम्राट प्रेमचंदजी की अंतिम और सर्वोत्कृष्ट कृति है | 1936 में प्रकाशित यह उपन्यास यथार्थवादिता की दृष्टि से इनकी विशिष्ट कृति मानी जाती है, जिसका अमर नायक होरी दु:ख में जन्म लेता है, दु:ख में पलता है और दु:ख में मर जाता है | वह जिस आदर्श सुख की कल्पना करता है, वह स्वप्न बनकर रह जाता है | 'गोदान' का यथार्थ, समष्टि का यथार्थ है | होरी को एक केन्द्रीय चरित्र के रूप में उपस्थित कर कृषक और श्रमिक वर्ग के शोषण का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है | प्रत्येक किसान के आर्थिक अभाव की कभी समाप्त न होनेवाले एक लम्बी कहानी का नाम गोदान है | नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो के आंकरो के अनुसार वर्ष 1995 से 2014 के मध्य 296438 भारतीय किसानो ने जमींदारो, साहूकारो और बैंको का क़र्ज़ नहीं लौटा पाने के कारण आत्महत्या की है | यही तथ्य अमर नायक होरी के समसामयिक संदर्भ को रेखांकित करती है |

होरी का सम्पूर्ण जीवन आर्थिक अभाव की एक करूण कहानी है | वह अंतिम समय तक परिश्रम करता रहा, परन्तु उसके जीवन की कोई भी कामना पूरी नहीं हुई | जी-जान से परिश्रम करने के बावजूद उसे दूध-घी की तो बात ही नहीं अपने तथा अपने बच्चों के तन पर पुरे कपड़े भी नहीं मिले | वह भारतीय कृषक का प्रतिनिधि है, जो कर्ज में ही जन्म लेते है, कर्ज में ही जीते हैं और कर्ज में ही मर जाते हैं | कथा-नायक होरी उपन्यास का आदर्श पात्र नहीं बनकर वर्गगत विशेषताओं का प्रतिक है | होरी के समस्त संघर्षमय चरित्र को एक सूत्र में बंधाते हुए कहा है-" वह उत्पन्न हुआ, कष्ट भोगता रहा और अंत में निरीह स्थिति में मर गया |" गोदान के रचनाकाल में किसानों के प्रति ऐसी नकारात्मक स्थिति समाज के लिए अभिशाप है | होरी का करुण अवसान, जीवन के यथार्थ को उजागर करने के लिए आदर्श को भूमिगत होता दिखाता है |

**मूल शब्द:** नजराना, ब्रजपात, लगान, अभिशाप, दुर्दशा, बिसात, शगुन, नजराना, बेगार, निश्चेष्ट, त्रासद, प्रताड़ित, मार्मिक

## प्रस्तावना

गोदान में मूलतः दुखी कृषक-जीवन पर प्रकाश डाला गया है अत: अधिकांश विद्वान् आलोचकों का कथन है की 'गोदान' की मूल समस्या ऋण सम्बन्धी-समस्या है | होरी जैसे भोले-भाले कृषक को जमिन्दार राय साहव दोनों हाथो से लुटते हैं | लगान, नजराना, बेगार, शगुन न जाने किस-किस प्रकार के विधान हैं जिनके माध्यम से जमींदार द्वारा किसानों को लूटा जाता है | वे बेचारे विवश हो कर उन्हें धन प्रदान करते हैं | उसे अदा करने के लिए वे गाँव के छोटे-छोटे साहुकारों से ऋण लेते हैं | एक दिन की घटना- "अषाढ़' का महिना बीत गया और वर्षा न हुई सहसा एक दिन बादल उठे और आषाढ़ का पहला दौंगरा गिरा | किसान खरीफ बोने के लिए हल लेकर निकले की कारकुन ने कहलवा भेजा, जब तक बाकि न चुक जाएगी किसी के खेत में हल न ले जाने दिया जायगा | किसान पर जैसे ब्रजपात हो गया | सभी गाँव के महाजन के पास रुपये लेने के दौड़े |" ऐसी दशा में कृषको ऋण लेकर अदा करना पड़ता है | उनका शोषण करने वाला एक ही मगरमच्छ नहीं है बल्कि ग्राम में रहने वाले पटेसरी, दातादीन, झिंगुरी सिंह, 'दुलारी' साहुआइन, नौखेराम, मंगुरुशाह आदि भी शोषण करते हैं | होरी कर्जदार है | फसल सब खलियान में ही उठ जाती है फिर भी 300 रुपये का कर्जा है | जिस पर 100 रुपये सुद के थे | मंगल शाह से 5 साल पूर्व बैल खरीदने के लिए 60 रुपये लिए थे आज वह 60 रुपये दे चूका है परन्तु 60 अभी शेष है | दातादीन पंडित से 30 रुपये लेकर आलू बोये थे | आलू को चोर खोद ले गए उसके तीस के 100 रुपये हो गए | लगान के भी 25 रुपये शेष है | दशहरे के लिए राय साहेब के यहाँ धनुष यज्ञ में शगुन देना शेष है | गोबर और सोना का विवाह करना है | इसके लिए यह किससे कर्ज ले, यह बहुत बड़ी समस्या उनके सामने थी | कितना चाहता है की किसी से 1 पैसा कर्ज न ले, जिसका आता है उसका पाई-पाई चूका दे | लेकिन हर तरह का कष्ट उठाने पर भी गला नहीं झूटता | इसी तरह सूद बढ़ता जायेगा तो एक दिन वह घर-द्वार सब नीलाम हो जायेगा, उसके बाल-बच्चे निराश्रय होकर भीख मांगते फिरेंगे | होरी जब काम-धंधे से छुट्टी पाकर चिलम पिने लगता तो यह चिंता एक काली दिवार की भांति चारों ओर से घेर लेती थी | यह होरी को ज्ञात था की वह कर्ज से लदा हुआ है | परन्तु बेचारा क्या करें | भारतीय किसान के भाग्य में तो यही लिखा है की वह ऋण में जन्म लेता है ऋण में रहता है और ऋण में चल बसता है | चुकाने के लिए उसके खलियान में ही फसल उठ जाती है, जमीन बिक जाती है, बैल नहीं रहते | अपनी छोटी बेटी रूपा का विवाह एक अधेड़ व्यक्ति से करके वह उसे 200 रुपये लेता है | पर वह क्या करे ? निर्धनता उसे बराबर पीस रही है | एक समस्या के समाधान के लिए वह ऋण लेता है तो उसका ब्याज इतना हो जाता है कि अन्य ऋण लेना पड़ता है | वह जनता है कि निर्धनता अभिशाप है परन्तु वह उसे कैसे दूर करे ? मरते दम तक निर्धनता उसका साथ नहीं छोड़ती | वह जनता है की मरने पर ही उसकी दुर्दशा समाप्त हो सकती है | अत: अंत समय में वह अपनी पत्नी धनिया से कहता है – "धनिया कब तक जिलाएगी ? सब दुर्दशा तो हो गई |"

प्रेमचंद ने अपने पात्रों में माध्यम से मानव-स्वभाव के विविध क्षितिजों का सहज उद्घाटन किया है | उनके पात्र मात्र विचारों के प्रतिक नहीं बल्कि परिस्थितियों के

संघर्षमय परिपाशर्वो की देन हैं | इसी कारण वे हमें यदि नितांत अपने से नहीं तो नितांत परिचित से तो अवश्य लगते हैं | इनके पात्र मानव-चरित्र के यथार्थ चित्र उपस्थित करते हैं | गोदान में उन्होंने होरी के रूप में एक ऐसे ही पात्र का निर्माण किया है, जो संवेदनशील होते हुए वर्तमान व्यवस्था का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है |

होरी भारतीय कृषक जीवन का प्रतिनिधि रूप है | किसानों को अपने जीवन में जितनी भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन सभी समस्याओं का सामना होरी महतो को करना पड़ा, जिसने उसके जीवन को निरंतर संघर्षमय बनाये रखा | होरी स्वतंत्रता-पूर्व भारत के अवध प्रान्त के बेलारी नमक ग्राम का एक साधारण किसान है | उसका मालिकाना मात्र 5 बीघे खेत पर है | उसके अपने शब्दों में इतनी थोड़ी जमीन वाले किसान की बिसात ही क्या होती है |'उसका परिवार बड़ा है और आमदनी कम-जिससे जीवनव्यापी समस्या सामने है किन्तु वह अपनी थोड़ी जमीं से भी संतुष्ट है और स्वयं को भाग्यवान समझता है की उसे 'महतो' की उपाधि मिली हुई है और जमींदार की जी-हुजूरी करते रहने के कारण तीन-तीन, चार-चार हल वाले किसान उसका आदर करते हैं, उसे देखते ही राम-राम करने लगते हैं और सम्मानभाव से चिलम पिने का निमंत्रण देते हैं |

होरी एक सीधा-सादा अत्यंत साधारण-सा किसान है | वह छल-प्रपंचों से दूर रहता है, परन्तु स्वार्थ लाभ के लीए झूठ बोलने को पाप नहीं समझाता | वह सह्रदय है, उसके ह्रदय में सभी के लिए सहानुभूति है | वह व्यवहार कुशल है | अपने घर की मर्यादा को बचाये रखने की दृष्टि से वह काम-काज छोड़कर भी जमींदार से मिलाने जाता है, जबकि जमींदार (रायसाहब) उसका न तो लगान ही छोड़ते हैं और न तो बेगार लेने में ही कोई कसर छोड़ते हैं | उसकी पत्नी (धनिया) और पुत्र गोबर होरी से नाराज भी होते हैं कि क्यों वह जमींदार की जी-हजुरी में लगा रहता है | होरी का दृष्टिकोण अपनी पत्नी और बच्चों से अलग है | वह मानता है कि जिन तलवों के नीचे गर्दन दबी हो उनको सहलाने में ही उसकी कुशलता है। उसका जीवन तथा उसकी दृष्टि सीमित है | ईमानदारी उसमें कूट-कूटकर भरी है | होरी आर्थिक जकड़ की कर्कशता में शिथिल और चेष्टागत तौर पर निश्चेष्ट है | वह कितना चाहता है कि किसी से एक पैसा भी कर्ज न ले, जिसका आता है, उसका पाई-पाई चूका दे, लेकिन हर तरह का कष्ट उठाने पर भी गला उहीं छूटता |

गोदान प्रेमचंद का एक ऐसा उपन्यास है जिसमें उनकी कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची है। गोदान में भारतीय किसान का संपूर्ण जीवन - उसकी आकांक्षा और निराशा, उसकी धर्मभीरुता और भारत परायणता के साथ स्वार्थपरता ओर बैठकबाजी, उसकी बेबसी और निरीहता- का जीता जागता चित्र उपस्थित किया गया है जिसमें उसकी गर्दन जिस पैर के नीचे दबी है वह उसी को सहलाता, अपनी पीड़ा, क्लेश और वेदना को झुठलाता, 'मरजाद' की भावना पर गर्व करता, ऋणग्रस्तता के अभिशाप में पिसता, तिल-तिल शूलों भरे पथ पर जीवन यापन करते हुए दिखाया है। वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदंड यह किसान कितना शिथिल और जर्जर हो चुका है, यह गोदान में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। गोदान वास्तव में, 20वीं शताब्दी की तीसरी और चौथी दशाब्दियों के भारत का ऐसा सजीव चित्र प्रस्तुत करता है वैसा साहित्य की किसी भी अन्य शैली में मिलना दुर्लभ है।

नगरों के कोलाहलमय चकाचौंध ने गाँवों की विभूति को कैसे ढँक लिया है, जमींदार, मिल मालिक, पत्र संपादक, अध्यापक, पेशेवर वकील और डाक्टर, राजनीतिक नेता और राजकर्मचारी जोंक बने कैसे गाँव के इस निरीह किसान का शोषण कर रहे हैं और कैसे गाँव के ही महाजन और पुरोहित उनकी सहायता कर रहे हैं, गोदान में ये सभी तत्व प्रेमचन्द के इस उपन्यास में हमारे सामने स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जाते हैं। होरी के जीवन की आर्थिक दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं – "घर का एक हिस्सा गिरने को हो गया। द्वार पर केवल एक बैल बंधा हुआ था, वह भी नीमाजान- अब इस घर के संभलने की क्या आशा है- सारे गाँव पर यही विपत्ति थी। ऐसा एक भी आदमी नहीं था जिसकी रोनी सूरत न हो। चलते फिरते थे, काम करते थे, पिसते थे, घुटते थे, इसलिए कि पिसना और घुटना उनकी तकदीर में लिखा था। जीवन में न कोई आशा और न कोई उमंग, जैसे उनके जीवन के सोते सूख गए हों और सारी हरियाली मुरझा गई हो, भविष्य अंधकार की भांति उनके सामने है।"

प्रेमचन्द का इस रचना में गांधीवाद से मोहभंग इसीलिये हुआ है क्योंकि गांधीवाद किसी भी प्रकार से होरी जैसे किसानों की समस्या का निदान देने में असमर्थ रहा था और इसी कारण गोदान में आकर यथार्थवाद नग्न रुप में हमारे सामने अपने को प्रस्तुत करता है। क्योंकि कोई भी नेता कृषकों की समस्याओं को न तो समझता है और न ही समस्या के निवारण हेतु प्रयास करते हैं। यह बात भी यहाँ बताना आवश्यक है कि भारतीय नेता किसानों की समस्याओं का निदान ढूंढने में असमर्थ रहे है और कृषि संबंधी समस्याओं ने वर्तमान युग में विकराल रूप धारण कर लिया है जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान समय में किसान आत्महत्या करने के लिये बाधित हो जाता है।

होरी के शोषण के ऐतिहासिक कारण हैं। रामविलास शर्मा इन्हीं संदर्भों में अपना मत अभिव्यक्त करते हुये कहते हैं कि "गोदान में किसानों के शोषण का रूप ही दूसरा है। रायसाहब के कारिंदे सीधे होरी का घर लूटने नहीं जाते, मगर होरी लुट जाता है कचहरी कानून के सीधे हस्तक्षेप के अभाव में भी उसकी जमीन छिन जाती है। होरी जैसा किसान शोषण के औपनिवेशिक तंत्र के सामने अकेला और निरीह है। होरी कहता है गाँव में इतने आदमी तो हैं, किस पर बेदखली नहीं आई, किस पर कुड़की नहीं आई। धनिया के पारिवारिक जीवन का अनुभव यह है कि कितनी भी कतर ब्योंत करो, लगान बेबाक होना मुश्किल है। इसी मुश्किल और असंभवता को प्रेमचंद ने गोदान का सार बना डाला है। गोदान अंततः दो सभ्यताओं का संघर्ष है एक ओर किसानी सभ्यता है जिसका प्रतिनिधित्व होरी करता है जबकि दूसरी ओर महाजनी सभ्यता है। यह सुवाभाविक है कि सामंती सभ्यता से महाजनी सभ्यता के इस बदलाव में आखिरकार होरी पराजित होता है। मरजाद की जिद के साथ होरी का मरना गोदान के अंत को एक त्रासद बिंदु बना देता है। इस यथार्थवादी उपन्यास के नायक होरी का यह त्रासद अंत पाठक को देर तक और दूर तक अपनी जद में लिए रहता है।"

सम्पूर्ण गोदान में किसानों का खून चूसने वाली महाजनी सभ्यता का क्रूर शोषण चक्र दिखाई देता है। इस चक्र में फंसा हुआ होरी साधनविहीन हैं जिस पर सामन्तवादी व्यवस्था रहम नहीं करती और न ही पूंजीवादी व्यवस्था क्योंकि दोनों का आधार अर्थ है। व्यवस्था के शोषण के शिकार ये किसान भिन्न-भिन्न रूप से प्रताड़ित, अपमानित और पीड़ा से भरी जिंदगी को मर-मरकर जीते हैं पर उन पर किसी भी व्यक्ति को करुणा नहीं आती। शोषण और संत्रास को चुपचाप सहते जाने की इस लंबी परम्परा को होरी न उलटता है और न पलटता है केवल बर्दाश्त करता है। वह मानता है कि जिन तलवों के नीचे गर्दन दबी हो उनको सहलाने में ही कुशल है। यह उपन्यास जमीदार, अफसर, पटवारी, साहूकार, पुरोहित के आतंक में फँसे होरी की लाचारी का मार्मिक बिंब है। महाजनी सभ्यता के क्रूर पंजों में फँसे होरी की कहानी किसी भी गरीब और शोषित भारतीय किसान की भाँति ही है जो गरीबी की मार, बंटवारे का दर्द, कर्ज की मार, बैलों की जोड़ी के बिक जाने या मर जाने का सदमा, आधा खेत, साझे की खेती का अपमान और अपने खेतों की नीलामी का दंश सहता हुआ आखिरकार मजदूरी करने को बाध्य हो जाता है। होरी के चरित्र

में विद्रोह और क्रांति की इच्छा न दिखाकर प्रेमचंद ने होरी को एक आम किसान का प्रतिनिधि बनाए रखा।

गोदान के होरी को हमारी धर्म से, अर्थ से और काम से तनिक भी मोक्ष नहीं मिलता है क्योंकि वे किसान के लिये केवल आलंकारिक शब्द मात्र है। डॉ. महेन्द्र भटनागर इन्हीं संदर्भों में कहते है, "होरी के दयनीय चित्र द्वारा प्रेमचंद ने समाज को चुनौती दी है कि किसान अस्तित्व-अस्तित्व के दोराहे पर खडा है, जहाँ से आगे या तो आत्म-संहार की अतुल जलराशि है या स्वत्व छीन कर इन्सान की तरह जी जाने के संकल्प की कठोर-विषम-भूमि विनाश है या क्राँति।" यह तो निश्चित है कि मनुष्य अपनी सामाजिक व्यवस्था से अलग होकर रह नहीं सकता है। यह प्रणाली प्रकृतिगत नियमों से बंधी हुई है। ये व्यवस्था तलवार के समान उनके सिर के ऊपर रहते है जो साधनहीन है। इसलिए वर्तमान में भी किसानों के आत्महत्या की संख्या में उत्तरोत्तर विकास हो रहा है।

**निष्कर्ष**

गोदान की कथा का अंत अत्यंत मार्मिक है | होरी गो-पालन की अभिलाषा लिए मर जाता है | उसी अनवरत इच्छा पालने वाले होरी से गो-दान कराया जाता है | होरी और धनिया के जीवन भर के संघर्ष, परिश्रम और ईमानदारी का कारूणिक अंत होता है, धनिया की एकमात्र आखिरी पूंजी कुल 20 आना | धनिया मातादीन से कहती है- "महाराज, घर में गाय है, न बछिया, न पैसा | "यही पैसे है, यही इनका गो-दान है |" और उसका गिरना होरी की गो-पालन की इच्छा का अन्त हो जाना है | प्रेमचंद का वास्तविक होरी जहाँ पाठक की करुणा का पात्र बनता है वहीं सहृदय पाठक यह भी आवश्यकता महसूस करता है कि कहीं न कहीं वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में बदलाव होना चाहिये ताकि साधनहीन व्यक्ति भी समाज में सुखपूर्वक रह सके। साफ़ शब्दों में कहा जाये तो गोदान में शोषण के अबाध चक्र को प्रस्तुत कर उसके प्रति जनजीवन को सावधान करते और अंत में वर्गहीन समाज मे सामंजस्य का संदेश देने का प्रयास किया है ताकि जिन व्यवस्थावादी परिणामों को हमारे पुरखों ने झेला है वे हमारी आने वाली सन्तानों को न झेलने पड़ें।

**संदर्भ सूची**

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारणी सभा)
2. प्रेमचंद और उनका युग – राम विलाश शर्मा (कमल प्रकाशन)
3. गोदान और मैला आँचल : आलोचना के अँधेरे – मनीष
4. गोदान: नया परिपेक्ष्य – डॉ. गोपाल राय